Dr. B. Kr

# नीरसता के कारण
# Causes of Monotony.

नीरसता के कई कारण हैं जिनमें निम्नांकित प्रमुख हैं-

1. कार्य का स्वरूप
2. बुद्धि स्तर
3. व्यक्तित्व शीलगुण
4. कार्य अवस्था
5. सामाजिक प्रभाव

1. कार्य का स्वरूप - नीरसता की उत्पत्ति उन कार्यों से होती है जिनका स्वरूप पुनरावर्ती होता है। ऐसे कार्य का स्वरूप स्वचालित या अर्द्धस्वचालित होता है जिसमें मस्तिष्कीय ऊर्जा (Brain energy) कम-से-कम खर्च होती है और कार्य कर्त्ता का ध्यान कार्य से हटकर इधर-उधर भटकने लगता है।

2. बुद्धि-स्तर - सामान्यतः अधिक तीव्र बुद्धि के कार्यकर्त्ता में कम बुद्धि के कार्यकर्त्ता की अपेक्षा नीरसता तथा विरसता की अनुभूति तेजी से पनपती है। Ex- कम बुद्धि का कार्यकर्त्ता प्लेट धोने या पत्ता का प्लेट बनाने के लिए पत्ता मोड़ने के कार्य से संतुष्ट हो सकता है और उसे वह कार्य मनोरंजक लग सकता है, परंतु अधिक तीव्र बुद्धि के कार्यकर्त्ता को ऐसे कार्य या कोई अन्य साधारण कार्य जिसमें उसकी बौद्धिक क्षमता का उपयोग नहीं होता है हो, तो वह कार्य उस व्यक्ति के लिए नीरस लगेगा।

3. व्यक्तित्व-शीलगुण - "कुण्डलिक" ने अपने अध्ययन के आधार पर तीन तरह के व्यक्तियों का वर्णन किया है जिनमें नीरसता की संभाव्यता अलग-अलग होती है। ये हैं -

(1) Type A व्यक्ति जिनमें दिये गए कार्य में ध्यान पूर्णतः लगा देने की प्रवृत्ति तो होती है परंतु वे ऐसा करने से अपने को असक्षम पाते हैं।

इससे उनके मन में संघर्ष होता है तथा कार्य के प्रति नीरसता तथा उकताहट की अनुभूति विकसित होने लगती है।

(ii) Type B व्यक्ति वैसे व्यक्ति होते हैं जो अपने ध्यान को बाँट सकने में सक्षम होते है। अपने ध्यान को अंशतः दिए गए कार्य में लगाते हैं तथा अंशतः वे अपने ध्यान को कहीं और अन्य मनोरंजक कार्य में लगाकर रखते हैं। जिसके कारण ऐसे व्यक्ति में नीरसता उत्पन्न होने लगती है।

(iii) Type C वाले व्यक्ति अपने कार्य को पूर्ण करता है तथा उनमें नीरसता नहीं पाया जाता है।

4. कार्य अवस्था - कार्य अवस्था के कारण नीरसता के प्रमुख कारक हैं -

(a) विश्राम अवस्था - जब पुनरावर्ती कार्यों में विश्राम नहीं दिया जाता है, तो इस तरह की अवस्था से कार्यकर्त्ताओं में नीरसता की अनुभूति तेजी से उत्पन्न होने लगती है।

(b) भुगतान तंत्र - 'साक्स' द्वारा किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि समय-आधारित भुगतान में काम-आधारित भुगतान की अपेक्षा नीरसता तथा विरसता तेजी से उत्पन्न होती है।

(c) कार्य के दौरान बातचीत करने का अवसर - जब कार्य के दौरान बातचीत करने का मौका नहीं मिलता है तो इससे नीरसता उत्पन्न होने लगता है।

5. सामाजिक कारक - नीरसता के ऊपर सहकर्मियों की मनोवृत्ति तथा व्यवहार, व्यवस्थापकों एवं अन्य उच्च अधिकारियों के व्यवहार का भी प्रभाव पड़ता है। यदि कोई कार्यकर्त्ता यह देखता है कि उसके सहकर्मियों, व्यवस्थापकों तथा अन्य उच्च अधिकारियों का व्यवहार उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण न होकर कटुतापूर्ण है तो उसे अपने कार्य के प्रति असंतोष होगा तथा धीरे-धीरे उसमें नीरसता एवं विरसता की अनुभूति होने लगेगी।